"तो मैं क्या करूँ?" :- "अर्थहीन सवाल"

तो, मैं क्या करूँ?
सवाल करते हैं लोग,
देखकर बदलाव, उनके-
आसपास के ओर।

आजकल होते अत्याचार,
देखकर मन में उठते सवाल,
कहाँ है इंसानियत? सबने,
मचा रखा है बवाल।

जीव वायु के पेड़ पौधे
कटे जा रहे हैं आधे,
बोलते फिर भी वे,
की आधे ही तो काटे हमने।

प्रदूषण के कारण आज,
वायु घुल गया है जहर से,
आज बाकी बचा समाज,
भी कल घुल जाएगा ~~इसी~~ जहर से।

बतलाते थे हम को,
झेलना पडेगा करतटों का सिला।
देता थी धरती धमकी,
यह कहकर, की न करो ऐसा किया।

धारा की निर्मल पानी,
जो खोती खुदकी पहचानी
जब मिलती सागर से,
आज उसकी हालत कैसी?

रुक गई बेचारी, हो गई है स्थिर,
वो जो देती थी हमे पानी,
और जो थी सहारा हजारों की,
रुखी सी, सूखी सी, प्यासी, अधूरी सी है। (मलिन)

पक्षी भटकते हैं आज,
ढूँढकर सिर्फ एक रात का सहारा।
लेकिन पेड़ काटते मानव समाज,
अब तक हज़ारों को किए बेसहारा।

न सिर्फ पेड़ काटकर,
न सिर्फ फेंककर कचरा,
बल्की मार डालकर आपस में,
जान लेकर खुद ही की जाती के।

करते हैं वे युध्द,
यह सोचकर की क्या होगा,
अगर कुछ हुआ उनके,
खुदके अभिमान को।
फेंकते हैं बोंम,
मारते हैं गोली,
तोड़ते हैं घर, निर्दोष जनता,
झेलते हैं सारे करतत का फल।
हो रही हैं चोरी,
लोग खो रहे हैं जान,
अपमानित हो रहे हैं बेटियाँ,
अत्याचार सहते साधू पशू।
कौन करता यह सब?
मानव जात के लोग ही न?
फिर मत पूछना बेवकूफी का सवाल,
की - "तो, मैं क्या करूँ?"
इनसान की ये करहकर देख,
खुदा भी रो बैठे,
एक जाती को बुध्दी दिए,
लेकिन अब वे खुद पछता बैठे।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

Item Code: 641 Participant Code: 045

अन्याय देखकर खुद -
न्याय की मूरत तक,
शर्मा बैठे, फिर भी,
सवाल करते लोग के मैं क्या करूँ?
पराए लोगों के संकट में
स्वार्थी बोलते, करतूत का फल है।
और खुदकी संकट को बोलते
भगवान का परीक्षण है।
न पूछो, "तो मैं क्या करूँ?"
बल्कि प्यार करना सिखाओ।
न पूछो "तो मैं क्या करूँ?"
बल्कि आपस में प्रेम बाँटो।
समझो तुम्हें ही करना है सब।
सब पूर्व स्थिती में ~~लाना~~ लाओ है अब।
जो बनाए धरती का ये हाल,
उन्हें ही ढूँढना पड़ेगा इसका हल।
धरती न किसीकी संपत्ती है
न किसीको इसपर अधिकार
प्राणियों मे भी तुलना बाँटा है
इस दुनिया पर आज़ादी।

समय अब भी बाकी है लोगों
एक और बार मिलकर करें प्रयास
धरती फिर ओढे हम,
पहले जैसे हरियाली में।
मिलकर रखें पेड़ हम,
मिलकर साफ़ करे नदियों को हम,
वापिस उसे सागर से
मुलाकात होने की अवसर दे।
युद्धोपकरणों को बनाते है खिलौना
सिखाते सबको जाती, भाषा, वर्ग आदी भूलना।
आने वाले पीढ़ी को,
देते है धरती पहले जैसा पुराना।
देखकर अवस्था आज की,
दोस्तो, मत पूछो बेवकूफों के तरह,
की "मैं क्या करूँ?" बल्की,
जागो, आवाज उठाओ, आसपास होते अन्याय के विरुद्ध
न पूछो निरर्थत वाला सवाल,
की "मैं क्या करूँ?" दुनिया को
हसीन बनाने एकता बनाए रखो।
धरती की खामोश चीखें को सुनो।